



Shreya

20 Oct 2002

04:45 AM

Dhar

Model: All-Dosha-Report

Order No: 121037001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 19-20/10/2002
दिन _____: शनि-रविवार
जन्म समय _____: 04:45:00 घंटे
इष्ट _____: 55:46:00 घटी
स्थान _____: Dhar
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 22:32:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:24:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:28:24 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 04:16:36 घंटे
वेलान्तर _____: 00:14:59 घंटे
साम्पातिक काल _____: 06:09:37 घंटे
सूर्योदय _____: 06:26:36 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:00:06 घंटे
दिनमान _____: 11:33:30 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 02:30:08 तुला
लग्न के अंश _____: 08:19:32 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: रेवती - 1
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: व्याघात
करण _____: वणिज
गण _____: देव
योनि _____: गज
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: दे-देविका
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1924	आश्विन	28
पंजाबी	संवत : 2059	कार्तिक	4
बंगाली	सन् : 1409	कार्तिक	3
तमिल	संवत : 2059	आइपसी	4
केरल	कोल्लम : 1178	तुलम	3
नेपाली	संवत : 2059	कार्तिक	4
चैत्रादि	संवत : 2059	आश्विन	शुक्ल 14
कार्तिकादि	संवत : 2059	आश्विन	शुक्ल 14

पंचांग

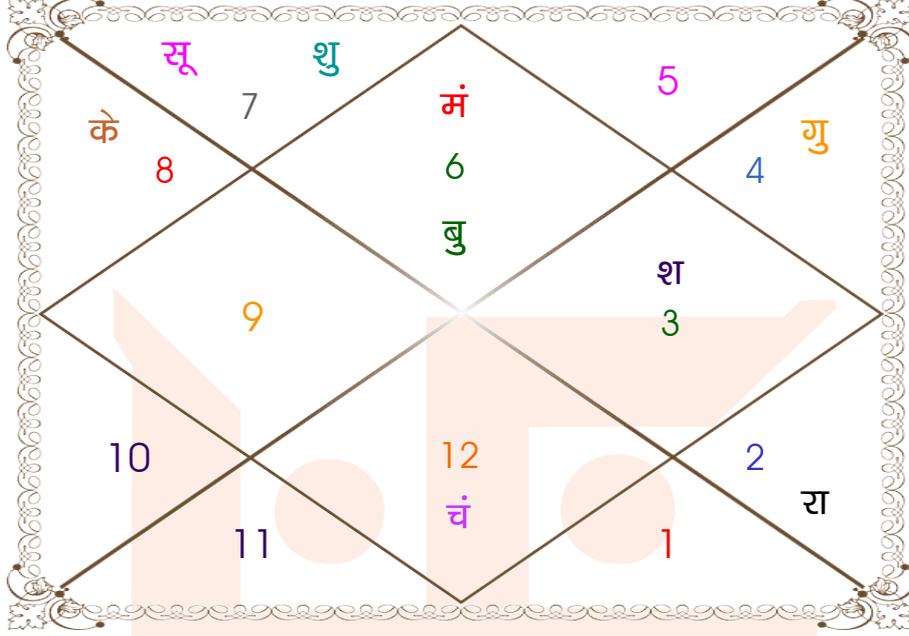
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 13
तिथि समाप्ति काल _____ : 07:48:33
जन्म तिथि _____ : 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : उ०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 26:04:37 घंटे
जन्म योग _____ : रेवती
सूर्योदय कालीन योग _____ : ध्रुव
योग समाप्ति काल _____ : 09:10:02 घंटे
जन्म योग _____ : व्याघात
सूर्योदय कालीन करण _____ : तैतिल
करण समाप्ति काल _____ : 07:48:33 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 06:40:57
भभोग _____ : 67:30:18
भोग्य दशा काल _____ : बुध 15 वर्ष 3 मा 24 दि

घात चक्र

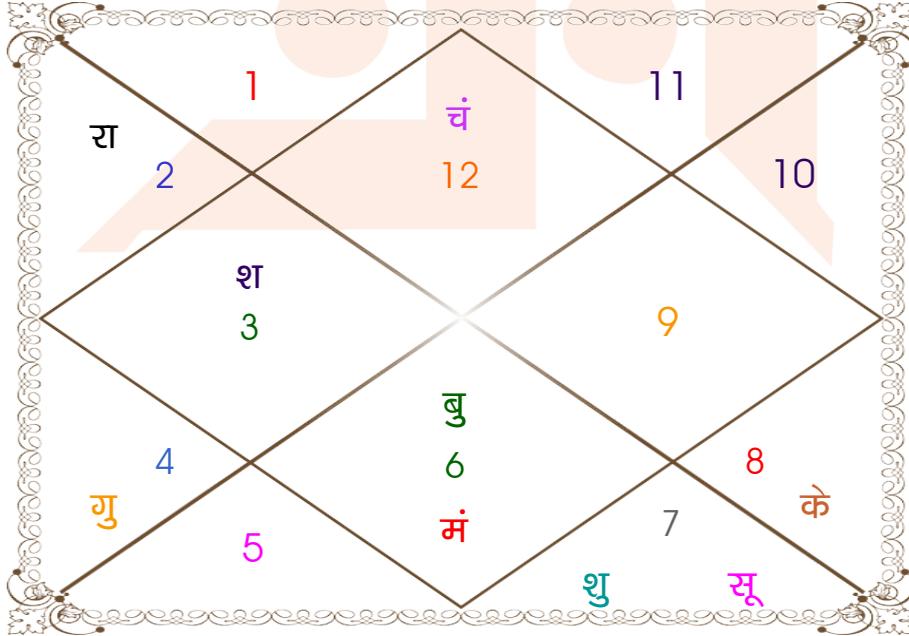
मास _____ : फाल्गुन
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : आश्लेषा
योग _____ : वज्र
करण _____ : चतुष्पाद
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : सिंह
सूर्य _____ : मिथुन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : कर्क
बुध _____ : कुम्भ
गुरु _____ : सिंह
शुक्र _____ : कन्या
शनि _____ : वृष
राहु _____ : तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

चं	रा	श
		गु
के	शु सू	बु ल मं

लग्न कुण्डली

रा	चं
श	
गु	
बु ल मं	सू शु के

विंशोत्तरी
बुध 15वर्ष 3मा 24दि
बुध
20/10/2002
13/02/2121

बुध	12/02/2018
केतु	12/02/2025
शुक्र	12/02/2045
सूर्य	12/02/2051
चन्द्र	12/02/2061
मंगल	13/02/2068
राहु	12/02/2086
गुरु	13/02/2102
शनि	13/02/2121

योगिनी
उल्का 5वर्ष 4मा 26दि
पिंगला
16/03/2024
17/03/2026

पिंगला	26/04/2024
धान्या	26/06/2024
भामरी	15/09/2024
भद्रिका	25/12/2024
उल्का	26/04/2025
सिद्धा	15/09/2025
संकटा	24/02/2026
मंगला	17/03/2026

श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश
+919340201506, 7024210124
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

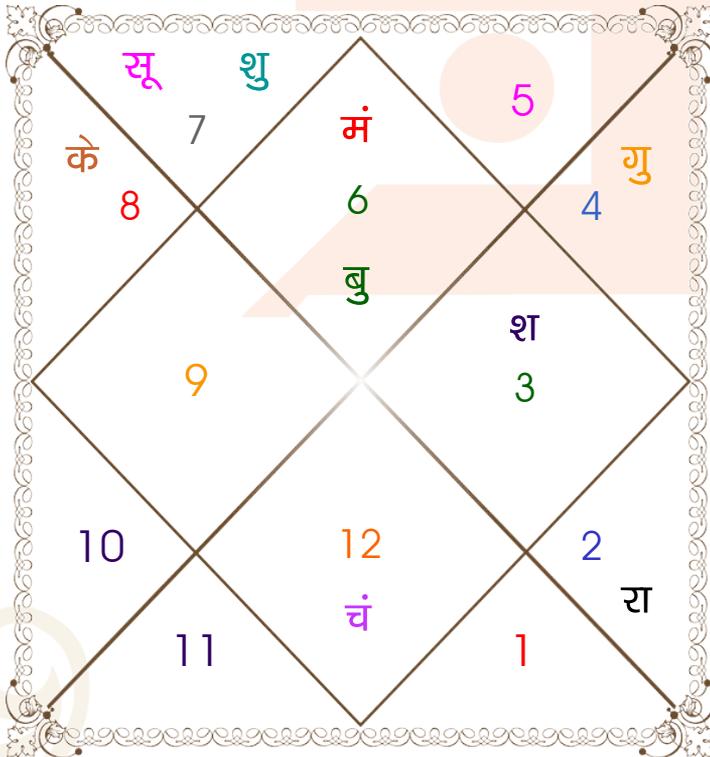
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	08:19:32	333:24:47	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	---
सूर्य			तुला	02:30:08	00:59:36	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	केतु	नीच राशि
चंद्र			मीन	17:59:13	11:51:12	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	सम राशि
मंगल			कन्या	08:48:34	00:38:17	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
बुध			कन्या	16:33:05	01:30:48	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण
गुरु			कर्क	21:03:38	00:07:48	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	उच्च राशि
शुक्र	व		तुला	20:01:36	00:21:52	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	स्वराशि
शनि	व		मिथु	05:07:41	00:00:56	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	सूर्य	मित्र राशि
राहु	व		वृष	15:31:49	00:08:13	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	15:31:49	00:08:13	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	मित्र राशि
हर्ष	व		कुंभ	01:06:52	00:00:45	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	---
नेप	व		मक	14:18:14	00:00:01	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	---
प्लूटो			वृश्चि	21:47:48	00:01:39	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	सूर्य	---
दशम भाव			मिथु	08:18:38	--	आर्द्रा	--	6	बुध	राहु	राहु	--

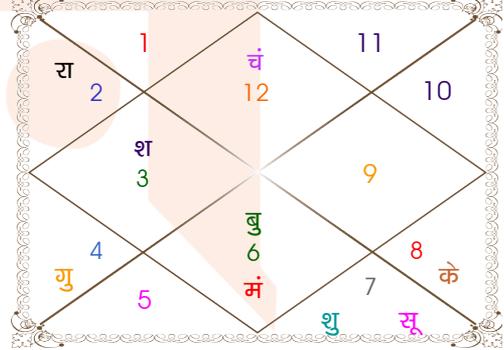
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:53:29

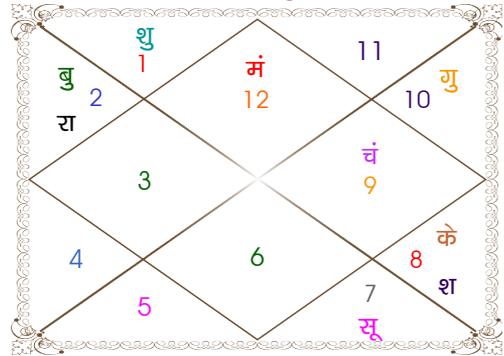
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश
+919340201506, 7024210124
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 23:19:23	कन्या 08:19:32
2	कन्या 23:19:23	तुला 08:19:14
3	तुला 23:19:05	वृश्चिक 08:18:56
4	वृश्चिक 23:18:47	धनु 08:18:38
5	धनु 23:18:47	मकर 08:18:56
6	मकर 23:19:05	कुम्भ 08:19:14
7	कुम्भ 23:19:23	मीन 08:19:32
8	मीन 23:19:23	मेष 08:19:14
9	मेष 23:19:05	वृष 08:18:56
10	वृष 23:18:47	मिथुन 08:18:38
11	मिथुन 23:18:47	कर्क 08:18:56
12	कर्क 23:19:05	सिंह 08:19:14

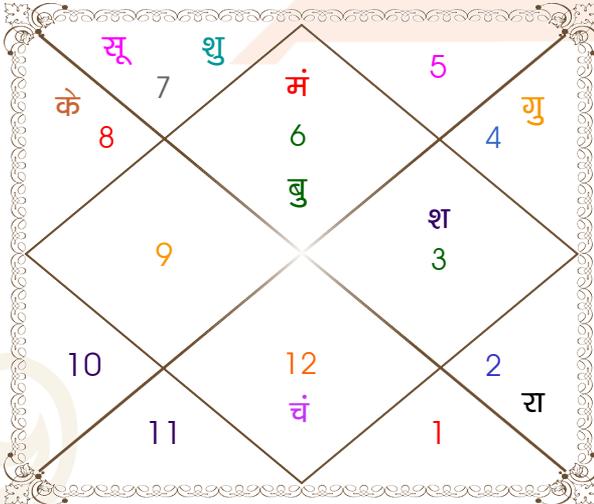
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	08:19:32
2	तुला	07:18:30
3	वृश्चिक	07:39:12
4	धनु	08:18:38
5	मकर	09:02:10
6	कुम्भ	09:27:29
7	मीन	08:19:32
8	मेष	07:18:30
9	वृष	07:39:12
10	मिथुन	08:18:38
11	कर्क	09:02:10
12	सिंह	09:27:29

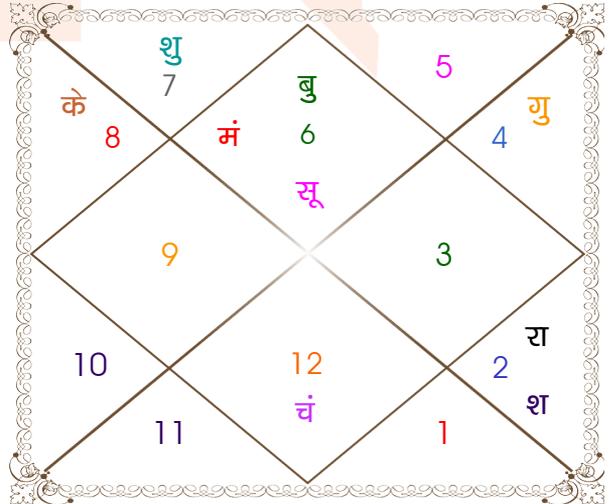
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली



भाव कुंडली



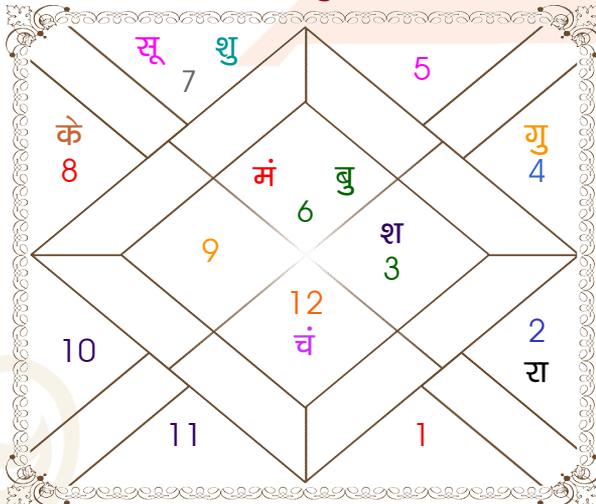
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----		----- अवस्था -----				ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	कलत्र	पितृ	बाल	भीत	आगमन	0.17	29 %
चंद्र	भातृ	मातृ	युवा	शान्त	प्रकाश	3.37	39 %
मंगल	पुत्र	भातृ	वृद्ध	खल	प्रकाश	0.45	63 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	युवा	स्वस्थ	निद्रा	9.91	60 %
गुरु	आत्मा	धन	कुमार	दीप्त	सभा	19.13	53 %
शुक्र	अमात्य	कलत्र	वृद्ध	स्वस्थ	प्रकाश	1.54	43 %
शनि	ज्ञाति	आयु	बाल	मुदित	उपवेशन	1.67	26 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	मुदित	आगम	0.00	51 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	मुदित	शयन	0.00	51 %
कुल						36.24	

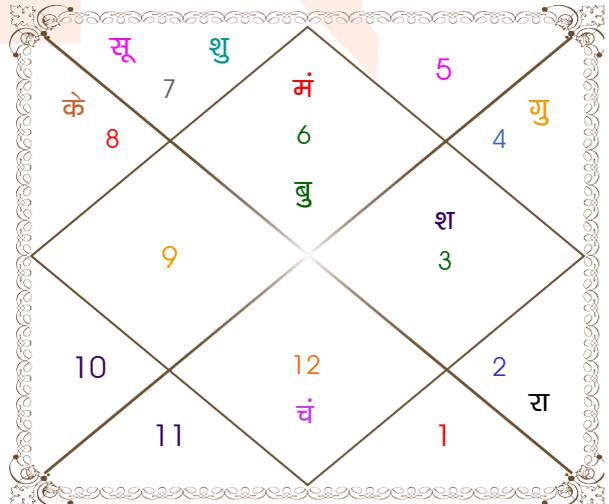
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पूर्वाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली



लग्न-चलित



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 15 वर्ष 3 मास 24 दिन

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
20/10/2002	12/02/2018	12/02/2025	12/02/2045	12/02/2051
12/02/2018	12/02/2025	12/02/2045	12/02/2051	12/02/2061
बुध 12/07/2003	केतु 11/07/2018	शुक्र 13/06/2028	सूर्य 01/06/2045	चंद्र 14/12/2051
केतु 08/07/2004	शुक्र 10/09/2019	सूर्य 14/06/2029	चंद्र 01/12/2045	मंगल 14/07/2052
शुक्र 09/05/2007	सूर्य 16/01/2020	चंद्र 12/02/2031	मंगल 08/04/2046	राहु 13/01/2054
सूर्य 14/03/2008	चंद्र 16/08/2020	मंगल 14/04/2032	राहु 03/03/2047	गुरु 15/05/2055
चंद्र 14/08/2009	मंगल 12/01/2021	राहु 14/04/2035	गुरु 20/12/2047	शनि 13/12/2056
मंगल 11/08/2010	राहु 31/01/2022	गुरु 13/12/2037	शनि 01/12/2048	बुध 14/05/2058
राहु 27/02/2013	गुरु 07/01/2023	शनि 12/02/2041	बुध 07/10/2049	केतु 14/12/2058
गुरु 05/06/2015	शनि 16/02/2024	बुध 14/12/2043	केतु 12/02/2050	शुक्र 13/08/2060
शनि 12/02/2018	बुध 12/02/2025	केतु 12/02/2045	शुक्र 12/02/2051	सूर्य 12/02/2061

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
12/02/2061	13/02/2068	12/02/2086	13/02/2102	13/02/2121
13/02/2068	12/02/2086	13/02/2102	13/02/2121	00/00/0000
मंगल 11/07/2061	राहु 26/10/2070	गुरु 01/04/2088	शनि 16/02/2105	बुध 21/10/2122
राहु 30/07/2062	गुरु 20/03/2073	शनि 14/10/2090	बुध 27/10/2107	00/00/0000
गुरु 05/07/2063	शनि 25/01/2076	बुध 19/01/2093	केतु 05/12/2108	00/00/0000
शनि 13/08/2064	बुध 14/08/2078	केतु 25/12/2093	शुक्र 05/02/2112	00/00/0000
बुध 10/08/2065	केतु 01/09/2079	शुक्र 25/08/2096	सूर्य 16/01/2113	00/00/0000
केतु 07/01/2066	शुक्र 01/09/2082	सूर्य 14/06/2097	चंद्र 18/08/2114	00/00/0000
शुक्र 09/03/2067	सूर्य 27/07/2083	चंद्र 14/10/2098	मंगल 27/09/2115	00/00/0000
सूर्य 15/07/2067	चंद्र 25/01/2085	मंगल 20/09/2099	राहु 03/08/2118	00/00/0000
चंद्र 13/02/2068	मंगल 12/02/2086	राहु 13/02/2102	गुरु 13/02/2121	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 15 वर्ष 3 मा 24 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र 12/02/2025 13/06/2028	शुक्र - सूर्य 13/06/2028 14/06/2029	शुक्र - चंद्र 14/06/2029 12/02/2031	शुक्र - मंगल 12/02/2031 14/04/2032	शुक्र - राहु 14/04/2032 14/04/2035
शुक्र 03/09/2025 सूर्य 03/11/2025 चंद्र 12/02/2026 मंगल 24/04/2026 राहु 24/10/2026 गुरु 04/04/2027 शनि 14/10/2027 बुध 03/04/2028 केतु 13/06/2028	सूर्य 02/07/2028 चंद्र 01/08/2028 मंगल 22/08/2028 राहु 16/10/2028 गुरु 04/12/2028 शनि 31/01/2029 बुध 23/03/2029 केतु 14/04/2029 शुक्र 14/06/2029	चंद्र 03/08/2029 मंगल 08/09/2029 राहु 08/12/2029 गुरु 27/02/2030 शनि 04/06/2030 बुध 29/08/2030 केतु 03/10/2030 शुक्र 13/01/2031 सूर्य 12/02/2031	मंगल 09/03/2031 राहु 12/05/2031 गुरु 08/07/2031 शनि 13/09/2031 बुध 13/11/2031 केतु 08/12/2031 शुक्र 17/02/2032 सूर्य 09/03/2032 चंद्र 14/04/2032	राहु 25/09/2032 गुरु 18/02/2033 शनि 10/08/2033 बुध 13/01/2034 केतु 18/03/2034 शुक्र 16/09/2034 सूर्य 10/11/2034 चंद्र 09/02/2035 मंगल 14/04/2035
शुक्र - गुरु 14/04/2035 13/12/2037	शुक्र - शनि 13/12/2037 12/02/2041	शुक्र - बुध 12/02/2041 14/12/2043	शुक्र - केतु 14/12/2043 12/02/2045	सूर्य - सूर्य 12/02/2045 01/06/2045
गुरु 22/08/2035 शनि 23/01/2036 बुध 09/06/2036 केतु 05/08/2036 शुक्र 14/01/2037 सूर्य 04/03/2037 चंद्र 24/05/2037 मंगल 20/07/2037 राहु 13/12/2037	शनि 14/06/2038 बुध 25/11/2038 केतु 01/02/2039 शुक्र 12/08/2039 सूर्य 09/10/2039 चंद्र 14/01/2040 मंगल 21/03/2040 राहु 11/09/2040 गुरु 12/02/2041	बुध 08/07/2041 केतु 07/09/2041 शुक्र 26/02/2042 सूर्य 19/04/2042 चंद्र 14/07/2042 मंगल 13/09/2042 राहु 15/02/2043 गुरु 03/07/2043 शनि 14/12/2043	केतु 08/01/2044 शुक्र 19/03/2044 सूर्य 09/04/2044 चंद्र 14/05/2044 मंगल 08/06/2044 राहु 11/08/2044 गुरु 07/10/2044 शनि 14/12/2044 बुध 12/02/2045	सूर्य 17/02/2045 चंद्र 26/02/2045 मंगल 05/03/2045 राहु 21/03/2045 गुरु 05/04/2045 शनि 22/04/2045 बुध 08/05/2045 केतु 14/05/2045 शुक्र 01/06/2045
सूर्य - चंद्र 01/06/2045 01/12/2045	सूर्य - मंगल 01/12/2045 08/04/2046	सूर्य - राहु 08/04/2046 03/03/2047	सूर्य - गुरु 03/03/2047 20/12/2047	सूर्य - शनि 20/12/2047 01/12/2048
चंद्र 17/06/2045 मंगल 27/06/2045 राहु 25/07/2045 गुरु 18/08/2045 शनि 16/09/2045 बुध 12/10/2045 केतु 23/10/2045 शुक्र 22/11/2045 सूर्य 01/12/2045	मंगल 09/12/2045 राहु 28/12/2045 गुरु 14/01/2046 शनि 03/02/2046 बुध 21/02/2046 केतु 01/03/2046 शुक्र 22/03/2046 सूर्य 28/03/2046 चंद्र 08/04/2046	राहु 27/05/2046 गुरु 10/07/2046 शनि 31/08/2046 बुध 17/10/2046 केतु 05/11/2046 शुक्र 30/12/2046 सूर्य 15/01/2047 चंद्र 11/02/2047 मंगल 03/03/2047	गुरु 11/04/2047 शनि 27/05/2047 बुध 07/07/2047 केतु 24/07/2047 शुक्र 11/09/2047 सूर्य 26/09/2047 चंद्र 20/10/2047 मंगल 06/11/2047 राहु 20/12/2047	शनि 13/02/2048 बुध 02/04/2048 केतु 22/04/2048 शुक्र 19/06/2048 सूर्य 06/07/2048 चंद्र 04/08/2048 मंगल 25/08/2048 राहु 16/10/2048 गुरु 01/12/2048

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध	सूर्य - केतु	सूर्य - शुक्र	चंद्र - चंद्र	चंद्र - मंगल
01/12/2048	07/10/2049	12/02/2050	12/02/2051	14/12/2051
07/10/2049	12/02/2050	12/02/2051	14/12/2051	14/07/2052
बुध 14/01/2049	केतु 15/10/2049	शुक्र 14/04/2050	चंद्र 10/03/2051	मंगल 26/12/2051
केतु 01/02/2049	शुक्र 05/11/2049	सूर्य 02/05/2050	मंगल 28/03/2051	राहु 27/01/2052
शुक्र 25/03/2049	सूर्य 11/11/2049	चंद्र 02/06/2050	राहु 12/05/2051	गुरु 25/02/2052
सूर्य 09/04/2049	चंद्र 22/11/2049	मंगल 23/06/2050	गुरु 22/06/2051	शनि 29/03/2052
चंद्र 05/05/2049	मंगल 30/11/2049	राहु 17/08/2050	शनि 09/08/2051	बुध 28/04/2052
मंगल 23/05/2049	राहु 19/12/2049	गुरु 05/10/2050	बुध 21/09/2051	केतु 11/05/2052
राहु 09/07/2049	गुरु 05/01/2050	शनि 01/12/2050	केतु 09/10/2051	शुक्र 15/06/2052
गुरु 19/08/2049	शनि 25/01/2050	बुध 22/01/2051	शुक्र 29/11/2051	सूर्य 26/06/2052
शनि 07/10/2049	बुध 12/02/2050	केतु 12/02/2051	सूर्य 14/12/2051	चंद्र 14/07/2052
चंद्र - राहु	चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि	चंद्र - बुध	चंद्र - केतु
14/07/2052	13/01/2054	15/05/2055	13/12/2056	14/05/2058
13/01/2054	15/05/2055	13/12/2056	14/05/2058	14/12/2058
राहु 04/10/2052	गुरु 19/03/2054	शनि 14/08/2055	बुध 24/02/2057	केतु 27/05/2058
गुरु 16/12/2052	शनि 04/06/2054	बुध 04/11/2055	केतु 27/03/2057	शुक्र 01/07/2058
शनि 13/03/2053	बुध 12/08/2054	केतु 08/12/2055	शुक्र 21/06/2057	सूर्य 12/07/2058
बुध 29/05/2053	केतु 09/09/2054	शुक्र 13/03/2056	सूर्य 17/07/2057	चंद्र 30/07/2058
केतु 30/06/2053	शुक्र 29/11/2054	सूर्य 11/04/2056	चंद्र 29/08/2057	मंगल 11/08/2058
शुक्र 30/09/2053	सूर्य 24/12/2054	चंद्र 29/05/2056	मंगल 28/09/2057	राहु 12/09/2058
सूर्य 27/10/2053	चंद्र 02/02/2055	मंगल 02/07/2056	राहु 15/12/2057	गुरु 11/10/2058
चंद्र 12/12/2053	मंगल 03/03/2055	राहु 27/09/2056	गुरु 22/02/2058	शनि 13/11/2058
मंगल 13/01/2054	राहु 15/05/2055	गुरु 13/12/2056	शनि 14/05/2058	बुध 14/12/2058
चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - राहु	मंगल - गुरु
14/12/2058	13/08/2060	12/02/2061	11/07/2061	30/07/2062
13/08/2060	12/02/2061	11/07/2061	30/07/2062	05/07/2063
शुक्र 25/03/2059	सूर्य 22/08/2060	मंगल 21/02/2061	राहु 07/09/2061	गुरु 13/09/2062
सूर्य 24/04/2059	चंद्र 07/09/2060	राहु 15/03/2061	गुरु 28/10/2061	शनि 06/11/2062
चंद्र 14/06/2059	मंगल 17/09/2060	गुरु 04/04/2061	शनि 27/12/2061	बुध 24/12/2062
मंगल 20/07/2059	राहु 15/10/2060	शनि 27/04/2061	बुध 20/02/2062	केतु 13/01/2063
राहु 19/10/2059	गुरु 08/11/2060	बुध 19/05/2061	केतु 14/03/2062	शुक्र 11/03/2063
गुरु 08/01/2060	शनि 07/12/2060	केतु 27/05/2061	शुक्र 17/05/2062	सूर्य 28/03/2063
शनि 14/04/2060	बुध 02/01/2061	शुक्र 21/06/2061	सूर्य 05/06/2062	चंद्र 25/04/2063
बुध 09/07/2060	केतु 12/01/2061	सूर्य 29/06/2061	चंद्र 07/07/2062	मंगल 15/05/2063
केतु 13/08/2060	शुक्र 12/02/2061	चंद्र 11/07/2061	मंगल 30/07/2062	राहु 05/07/2063

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

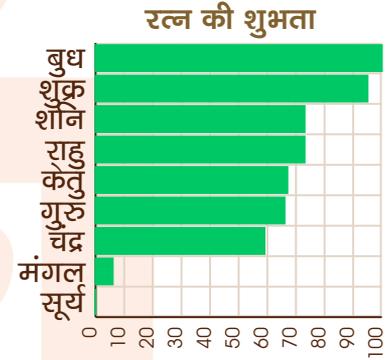
मूलांक	2
भाग्यांक	7
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	95%	धन, भाग्योदय
नीलम	शनि	73%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	73%	भाग्योदय, धन
लहसुनिया	केतु	67%	पराक्रम, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	66%	धनार्जन, सुख, दम्पति
मोती	चंद्र	59%	दम्पति, धनार्जन
मूंगा	मंगल	6%	रोग, दुर्घटना, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	धन हानि, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	12/02/2018	12%	44%	6%	100%	66%	100%	73%	73%	67%
केतु	12/02/2025	0%	44%	19%	100%	66%	100%	61%	61%	80%
शुक्र	12/02/2045	0%	44%	6%	100%	66%	100%	80%	80%	73%
सूर्य	12/02/2051	25%	66%	19%	100%	72%	82%	61%	61%	55%
चंद्र	12/02/2061	12%	72%	6%	100%	66%	95%	73%	61%	55%
मंगल	13/02/2068	12%	66%	31%	100%	72%	95%	73%	61%	73%
राहु	12/02/2086	0%	44%	0%	100%	66%	100%	80%	86%	55%
गुरु	13/02/2102	12%	66%	19%	100%	78%	82%	73%	73%	67%
शनि	13/02/2121	0%	44%	0%	100%	66%	100%	86%	80%	55%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/10/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059 -----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसाय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धन
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	दम्पति
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगी तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगी। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपके पति का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगी। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। इसके प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी परन्तु इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु जैसे अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात् आप विवाह करेंगी तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।



श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश
+919340201506,7024210124
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखचूड़ नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को भाग्योदय होने में थोड़ा व्यवधान उपस्थित होता है और नौकरी में आगे बढ़ने के प्रयास में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। परन्तु कालान्तर में व्यवधान स्वतः हट जाता है और कभी नौकरी में अवनति का भय होता है। व्यापार में थोड़ी बहुत रुकावट आकर नुकसान को जातक प्राप्त करता है। मित्रों द्वारा कपट व्यवहार होने के कारण जातक को धन की क्षति उठानी पड़ती है। पिता के सुख में न्यूनता रहती है। मामा पक्ष से या बहनोई से छल कपट किये जाने पर जातक आंशिक कष्ट पाता है और शासन की तरफ से भी थोड़ा बहुत मुसीबत आती है। अधिकारियों से कभी-कभी मनमुटाव हो जाता है। जिस कारण जातक को न्यायालय से कभी जुर्माना या आंशिक रूप में सजा मिल सकती है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में कभी-कभी रोग व्याधि ग्रसित कर लेती है। जिसमें थोड़ा बहुत धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। कालान्तर में पुनः वह सामान्य हो जाती है। जातक को चिन्ता परेशानी समय-समय पर लग जाती है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय बन जाता है तथा प्रायः भोग से अतृप्त रहती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। जातक कई प्रकार से धन्ये करता है पर स्थाई सफलता सदैव संदिग्ध रहती है। सुख प्राप्ति के लिए जातक को संघर्ष करना पड़ता है और सामाजिक मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा सामान्य रहती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।

11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ट व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।

कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते हैं। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता है।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, पंचमेश- षष्टेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता है, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया कन्या लग्न में उत्पन्न जातक अध्ययनशील होते हैं तथा कई विषयों के ज्ञानार्जन में उनकी रुचि रहती है। अतः समाज में सामान्यतया विदुषी के रूप में इनकी छवि रहती है। ये गुणवान व्यक्ति होते हैं भाग्य इनका प्रबल रहता है तथा अल्प परिश्रम से ही इनके सांसारिक महत्व के कार्य सफल हो जाते हैं जिससे भौतिक सुख संसाधन एवं धनैश्वर्य की इनके पास प्रचुरता रहती है। ये अत्यंत बुद्धिमान होते हैं तथा अपनी बुद्धि के द्वारा कठिन से कठिन समस्या का समाधान करने में समर्थ रहते हैं। अतः सरकारी कार्यों में प्रशासन के क्षेत्र में ये अपना योगदान प्रदान करते हैं तथा वहां सम्मानित एवं आदरणीय रहते हैं। ये भावुकता की अपेक्षा बुद्धि से कार्य लेते हैं जिससे इनके उन्नति मार्ग सर्वदा प्रशस्त रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा आपसे सभी लोग प्रभावित होंगे। अध्ययन के प्रति आपके रुचि होगी तथा विभिन्न विषयों का ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगी। आप लेखन मनोविज्ञान या आलोचना के क्षेत्र में सफलता अर्जित करेंगी। आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा सांसारिक महत्व के कार्यों में आपको अल्प परिश्रम से ही शीघ्र सफलता प्राप्त होगी। आपके बुद्धि में भी तीक्ष्णता रहेगी तथा गूढ़ से गूढ़ समस्याओं का समाधान करने में समर्थ होंगी फलतः प्रशासनिक क्षेत्र में आप अपना योगदान प्रदान कर सकती हैं। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

लग्न में मंगल की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा मानसिक उद्विग्नता रहेगी। पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा होगी तथा उनकी सेवा करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी। बाल्यावस्था में आपका समय संघर्ष पूर्ण रहेगा परन्तु मध्य अवस्था के बाद आप पूर्ण सुखी रहेंगी। पुत्र संतति से आप युक्त होंगी तथा इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा स्वपराक्रम एवं योग्यता से सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगी।

आप में तेजस्विता का भाव भी विद्यमान रहेगा अतः अवसरानुकूल आप उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी लेकिन इससे आपको कई बार अनावश्यक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। अतः उग्रता के भाव का यत्नपूर्वक परित्याग करना चाहिए। अन्य जनों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव भी रहेगा तथा समयानुसार परोपकार संबंधी कार्यों में भी इच्छा रहेगी। कार्य क्षेत्र में आपका प्रभाव रहेगा तथा लेखन या कला सम्बन्धी कार्यों में आपको सफलता मिलेगी। आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी तथा कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान करने में समर्थ रहेंगी अतः प्रशासनिक क्षेत्र में आप अपना योगदान प्रदान कर सकती हैं।

धर्म के प्रति आपके सामान्य श्रद्धा रहेगी तथा अल्प मात्रा में ही धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी। मित्र वर्ग में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी लोग आपको सहयोग प्रदान करेंगे इसके अतिरिक्त आप अपने पराक्रम तेजस्विता बुद्धिमत्ता तथा योग्यता से इच्छित मान - सम्मान प्राप्त करेंगी तथा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में तुला राशि उदित हुई है जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मधुर एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी तथा अपने वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में भी सम्पन्न रहेंगी। इसके साथ ही प्रौढ़ावस्था में आप अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट की भी अनुभूति कर सकती हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा धार्मिक तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यों को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य उत्सवों की भी प्रिय होंगी तथा ऐसे उत्सवों के आयोजन भी समय समय पर होते रहेंगे। जीवन में आपको पैतृक सम्पत्ति भी अर्जित होगी। साथ ही अपने परिश्रम पराक्रम एवं सौभाग्य से भी वांछित मात्रा में धनऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में सफल रहेंगी। परिवार को सुख सुविधा तथा प्रसन्नता प्रदान करना आपका मूल उद्देश्य रहेगा। समाज में आप एक आदरणीया महिला होंगी तथा सौभाग्य से अपना जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप समस्त संसारिक एवं भौतिक सुखों को अर्जित करने में सफल होंगी। आधुनिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों से भी युक्त होंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप एक वैभवशाली महिला होंगी तथा समाज में आपको यथोचित स्तर बना रहेगा तथा सभी लोग आपको वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगी।

आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में आपको काफी चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व प्राप्त होगा। मामा के प्रभाव या सहयोग से भी आपको काफी धन सम्पत्ति मिल सकती है। आप स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धिमता से चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी। आपको चल सम्पत्ति से शीघ्र लाभ होगा अतः इसके लिए आप समयानुसार पूंजी निवेश कर सकती हैं।

आपका आवास उत्तम होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त रहेगा। समस्त भौतिक उपकरणों की इसमें प्रबलता रहेगी। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगी तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगी। आपका घर किसी अच्छी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगी एवं आपसी संबंधों में भी अनुकूलता होगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगी तथा युवावस्था के बाद अपने वाहन का सुख प्राप्त करेंगी।

आपकी माता जी शिक्षित, बुद्धिमान एवं हास्य प्रिय महिला होंगी तथा अपने हास्यप्रिय स्वभाव से सभी को प्रसन्न तथा प्रभावित करेंगी। परिवार का वह पूर्ण लालन-पालन करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी सदस्य को कोई भी कष्ट नहीं होने देंगी। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे तथा मान-सम्मान भी प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनका विशिष्ट स्नेह भाव होगा एवं आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आपको समय समय पर उनसे वांछित आर्थिक सहयोग भी मिलता रहेगा। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपके आपसी संबंधों में मधुरता का भाव विद्यमान होगा।

लग्नेश बुध की स्थिति के प्रभाव से आप प्रारंभ से ही एक अध्ययनशील महिला होंगी तथा अपनी प्रारंभिक कक्षाओं से ही परीक्षाओं में अच्छे अंक अर्जित करेंगी। आप स्नातक परीक्षा भी अच्छे अंको से ससम्मान उत्तीर्ण करेंगी। इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव की वृद्धि होगी तथा भविष्य भी उज्ज्वल बनेगा। स्वजनों एवं मित्रवर्ग से आपको पूर्ण प्रोत्साहन तथा सम्मान मिलेगा। इससे अतिरिक्त आप न्याय संबंधित शिक्षा में इच्छित सफलता प्राप्त कर सकती हैं।

यद्यपि आप जीवन में सामान्यतया स्वस्थ ही होंगी परंतु वृद्धावस्था में यदा कदा रक्त चाप आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकती है। अतः यदि खान-पान का उचित पथ्य रखें तो ऐसी समस्याओं से आप सुरक्षित हो सकती हैं तथा सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत

करेंगी ।



श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश
+919340201506,7024210124
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। आपकी बुद्धिमता से अन्य लोग भी आपसे प्रभावित होंगे तथा वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। आप शीघ्रनिर्णय लेने तथा कठिन से कठिन समस्या को आसानी से सुलझाने में भी आप समर्थ होंगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म शास्त्र आदि में आपकी रुचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगी। विज्ञान, गणित या ज्योतिष के क्षेत्र में भी आपकी रुचि होगी एवं इनके ज्ञानार्जन में आप पूर्ण परिश्रम करेंगी। इससे आपकी विद्वता में वृद्धि होगी तथा सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी।

शनि की राशि के पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी। आप मनोरंजन एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करेंगी। आपके प्रेम में मर्यादा तथा नैतिकता का भाव बना रहेगा तथा एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। अतः ऐसे सम्बन्धों की परिणति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा सन्तति में कन्या सन्तति की अधिकता होगी। आपके बच्चे बुद्धिमान, गुणवान एवं चतुर होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनके आज्ञापालन में सदैव तत्पर रहेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सद्भाव एवं विश्वास बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान माता के माध्यम से ही करना पसन्द करेंगे लेकिन दोनों के प्रति सम्मान बराबर होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा आपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली मानी जायेंगी।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारम्भ से ही शिक्षा के क्षेत्र में नवीन उपलब्धियां अर्जित करेंगी। आप भी बच्चों की शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा उन्हें आधुनिक संस्थाओं में पढ़ाएंगी। अतः आपके परिश्रम एवं बच्चों की लगन से वे अपनी आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। वे अपने उत्तम कार्य-कलापों तथा व्यवहार से अन्य जनों को प्रभावित तथा प्रसन्न रखेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सम्मान अर्जित करेंगे। अतः बच्चों की ओर से आप सुखी रहेंगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा चन्द्रमा भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया मीन राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील कफ वात प्रकृति वाला धर्म में श्रद्धालु एवं धनवान होता है चन्द्रमा के प्रभाव से वह शिक्षित कला एवं संगीत प्रेमी एवं अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करने में चतुराई का प्रदर्शन करेंगे। धर्म के प्रति वे श्रद्धालु रहेंगे। वह शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा उच्च कोटि के साहित्य का अध्ययन करने में रुचिशील होंगे चन्द्रमा के प्रभाव से वह दयालु होंगे एवं कर्तव्यों का पालन करने में तत्पर रहेंगे।

आपके पति गौरवर्ण के सुंदर एवं आकर्षक व्यक्ति होंगे तथा कद भी मध्यम रहेगा। उनका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय होगा तथा शरीर की पुष्टता तथा सुडौलता उनके आकर्षण में वृद्धि करेंगी लेकिन आयु के साथ साथ जलचर राशि मीन एवं जलीय ग्रह चन्द्र के प्रभाव से शरीर में स्थूलता आ सकती है लेकिन सौन्दर्य पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त संगीत एवं कला में भी रुचिशील रहेंगे तथा सुंदर वस्तुओं का भी संग्रह करेंगे।

आपका विवाह निकट संबन्धियों के सहयोग से सम्पन्न होगा तथा इसमें महिला संबन्धियों का विशेष योगदान होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे का सुख दुख में पूर्ण ध्यान रखेंगे। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को आपसी सहयोग एवं सहमति से पूर्ण करेंगे। इससे परस्पर समानता का भाव रहेगा एवं संबंधों में भी मधुरता रहेगी जिससे वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्न पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह सामान्य परिवार में होगा तथा सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से उनका स्तर साधारण होगा। विवाह में मायके से आपको धन सम्पत्ति या दहेज की अल्प मात्रा में ही प्राप्ति होगी परन्तु किंचित उपहार अन्यत्र से प्राप्त हो सकते हैं। विवाह के बाद आपके सास ससुर से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको नैतिक सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होती रहेगी। साथ ही आप भी उनको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगी।

आपके पति का सास ससुर के प्रति श्रद्धा एवं सेवा की भावना रहेगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे साले एवं सालियों को भी वह अपने सद्व्यवहार तथा मृदुवाणी से प्रसन्न रखेंगे तथा वे भी उन्हें वांछित सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इसमें वांछित लाभ होगा। यदि मातृपक्ष से साझेदारी की जाए तो इसमें विशिष्ट लाभ होगा एवं आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। साथ ही शनि भी दशम भाव में ही स्थित है। मिथुन राशि एवं शनि दोनों वायुतत्व प्रधान हैं। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता रहेगी। आप स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय की इच्छुक होंगी तथा कार्य क्षेत्र में समय समय पर परिवर्तन करने की इच्छुक होंगी तथा ऐसे परिवर्तनों से आपको लाभ की प्राप्ति होगी।

शनि की दशम भाव में मिथुन राशि में स्थिति के कारण आपके लिए आजीविका के क्षेत्र वायु सेना, एयर लाइंस, खान एवं खनिज विभाग, भारी उद्योग के कर्मचारी या अधिकारी, पेट्रोलियम विभाग, संदेश वाहक, कला या चित्रकार आदि उत्तम एवं अनुकूल सिद्ध होंगी। यदि आप इन क्षेत्रों में अपनी आजीविका को प्रारंभ करें तो सुगमता पूर्वक उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त विभागों में ही अपनी आजीविका स्थल का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए लोहे का कार्य, प्रेस, भारी उद्योग फैक्टरी, लोहे के उपकरणों का निर्माण, पेट्रोलपम्प, खेती एवं बागवानी तथा राजनीति का क्षेत्र शुभ एवं अनुकूल रहेगा। साथ ही कलात्मक एवं चित्रकारी आदि से भी आप वांछित धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगी। अतः यदि आप व्यापार की इच्छुक हों तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार को प्रारंभ करना चाहिए जिससे उन्नति में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना न करना पड़े।

दशम भाव में शनि की स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। साथ ही जीवन में किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी सफल होंगी। आप सामाजिक संस्थाओं या क्लबों आदि में भी किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में कार्य करेंगी। चूंकि शनि एक नैसर्गिक पाप ग्रह है अतः आपको इच्छित सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने में विलम्ब होगा एवं किंचित समस्याओं का भी सामना करना पड़ेगा। अतः इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए इससे जीवन में आपको प्रसिद्धि की प्राप्ति होगी।

आपके पिता पराक्रमी तेजस्वी एवं बुद्धिमान होंगे तथा अन्य जनों पर उनका पूर्ण प्रभाव होगा तथा लोग भी उन्हें वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा एवं शिक्षा के क्षेत्र में उच्च स्तर पर व्यवस्था करेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता की प्राप्ति में उनका विशेष योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से आपको काफी सफलता मिलेगी। साथ ही आप भी अपने परिश्रम एवं ईमानदारी से कार्य करके पिता की प्रतिष्ठा को बनाए रखेंगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आपसी सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे परन्तु वैचारिक एवं सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में विशेष मधुरता नहीं होगी अतः ऐसे अवसरों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु षष्ठ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु दशम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि मेंएकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा परिणाम देने वाला रहेगा। इस वर्ष आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना बनाएं। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नतिहो सकती है या इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपकोजीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा। आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

02 जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकारुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप अपनी संचित पूंजी बढ़ाने के लिए निवेश भी करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

02 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगों में भी सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। यदि आप विवाहित हैं तो आपके जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप सामाजिक कल्याण के

लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 02 जूनके बाद पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। 31 अक्टूबर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। उस समय उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में लग्न स्थान पर शनि के दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी परेशानियां होती रहेंगी परन्तु गुरु के गोचरोपरान्त सब कुछ अनुकूल हो जाएगा।

02 जून के बाद गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करेंगे। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहेंगे। 31 अक्टूबर के बाद आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। छठे स्थान के राहु आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता दिलाएंगे। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी और वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। तकनीकी शिक्षा के लिए भी वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा।

यात्रा-तबादला

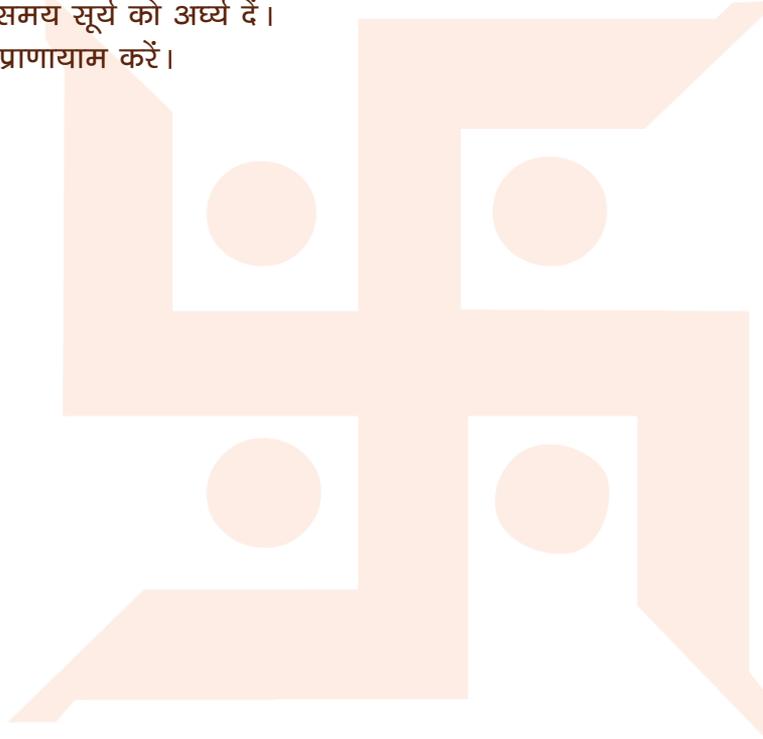
यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी जन्म स्थल की यात्रा होगी। परिजनो साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। द्वादश स्थान पर राहु एवं केतु ग्रह के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थभाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद दान पुण्य अधिक करेंगे।

- श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं। जिससे आपकी आर्थिक उन्नति व समाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष पंचम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः उत्तम रहेगा। आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ गुरु आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएंगे। बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा, जिसका लाभ उठा कर आप व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं, तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है।

जून के बाद आपका समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें उत्पन्न करेंगे। सकारात्मक सोच व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें क्योंकि वर्षान्त में शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाइयों का मुख्य योगदान होगा। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिलने की सम्भावना है, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय प्रभावित हो सकता है।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि

होगी। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपने वैदिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा बच्चों की उन्नति में अवरोध पैदा होगा।

जून के बाद पंचमस्थ राहु के प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे फलस्वरूप उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी ही स्वस्थ भी हो जाएंगे।

26 जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। उस समय मौसम जनित बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसम सम्बन्धित बीमारियां घेर सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 21 नवम्बर के बाद स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी शिक्षा में रुकावट आ सकती है। आलस्य की भावना आपकी शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

26 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है। 26 नवम्बर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 26 जून के बाद द्वादश स्थान के गुरु आप को विदेश यात्रा भी करा सकते हैं।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा के भक्ति या मन्त्र पाठ में रुचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होने से दान-पुण्य की मनोभावना उत्पन्न होगी।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में बहुत लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके कार्य व्यवसाय में व्यवधान आ सकता है। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरु हो जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको कार्यों में सफलता मिल सकती है। चतुर्थस्थ राहु के कारण नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धन संपत्ति

फरवरी के बाद आर्थिक उन्नति के लिए समय उत्तम नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इन सब के बावजूद आपका पैसा भी खो सकता है। किसी को उधान पैसा न दें। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। रुका हुआ धन वापस मिल सकता है जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु होगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी आपका खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में पारिवारिक माहौल उत्तम रहेगा परन्तु फरवरी के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके वैचारिक मतभेद होंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है।

24 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का

विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

पंचमस्थ राहु के प्रभाव से वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ से ही संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित कोई लापरवाही न करें। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

24 जुलाई के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता में वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फरवरी के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से स्वास्थ्य में अचानक उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह, पेट संबंधित एवं मौसमजनित बीमारियों के कारण ज्यादा परेशान हो सकते हैं। कभी कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद बीमार जैसा अनुभव होगा।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें। आपकी धर्मपत्नी आपकी सेहत का पूरा ध्यान रखेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। फरवरी के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

24 जुलाई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। फरवरी के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। जलीय क्षेत्र की यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

24 जुलाई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में शनि का गोचर यात्रा में व्यवधान उत्पन्न करता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष की शुरुआत कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगी। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार कार्य करते रहें।

25 अगस्त से समय काफी अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में आपका भाग्य साथ देगा। लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में निरंतरता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों में भी आप व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण माता या आपके स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ हो सकता है।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक समय काफी अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल आपके रुके हुए पैसे या फसे हुए पैसे मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। सितम्बर के बाद कोई बड़ा निवेश न करें। विशेष कर जमीन जायदाद में। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। 29 मार्च से पारिवारिक माहौल बिगड़ सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ मानसिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

25 अगस्त के बाद पारिवारिक वातावरण फिर से अनुकूल हो जाएगा और आपको परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का राहु माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उनके खान पान पर ध्यान दें। आप सामाजिक गतिविधियों में कम भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि भर्गाधान के लिए उत्तम योग बना रही है। नवविवाहित महिलाओं के लिए संतानोत्पत्ति का सुन्दर समय चल रहा है।

25 अगस्त के बाद संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में अष्टमस्थ शनि एवं लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित होता रहेगा। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा। आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

05 अक्टूबर से फिर से स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। 29 मार्च के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम रहेगा।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकता है। आपके लिए रोजगार के नये-नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

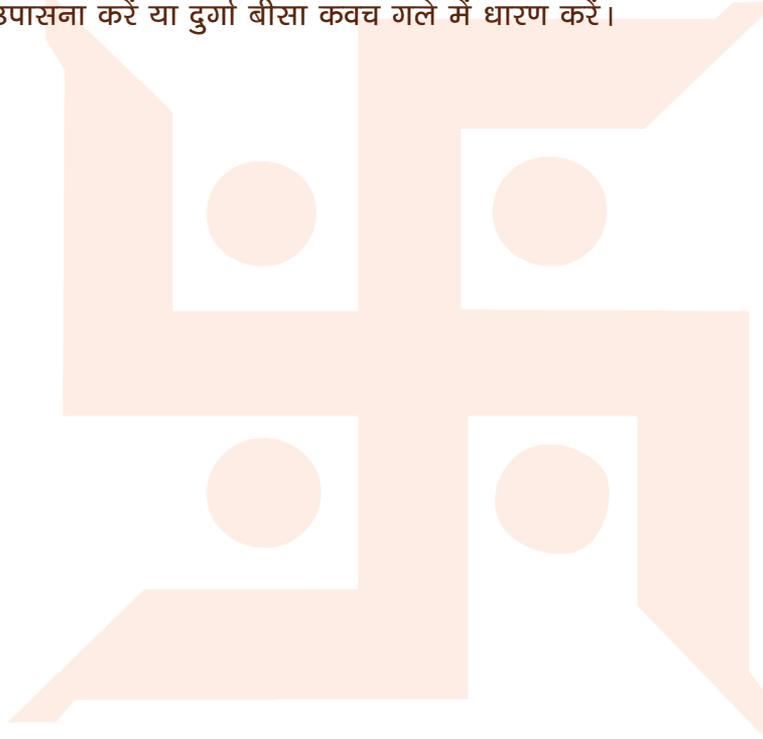
द्वादश स्थान पर राहु की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में विदेश यात्रा हो सकते हैं। 29 मार्च के बाद नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण आपके जन्म स्थल से दूर की लम्ब यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 29 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। 05 अक्टूबर के बाद नवमस्थ शनि के प्रभाव से धार्मिक यात्रा भी करेंगे। आपकी रुचि धार्मिक कार्यों के प्रति और बढ़ जाएगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आ सकता है, परन्तु 17 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ बड़ी उपलब्धियां लेकर आएगा।

पूर्ण रूप से यह वर्ष आपके लिए हितकर ही रहेगा। कार्यस्थल में भी आपका प्रदर्शन अच्छा रहेगा। जो लोग रोजगार के लिए परेशान हैं उन्हें जल्द ही सुखद समाचार मिलेगा। 23 सितम्बर से आप अपने काम को लेकर उत्साहित रहेंगे और अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए अथक प्रयास व मेहनत करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको मनचाहा परिणाम मिलेगा। आपको केवल अपनी एकाग्रता बनाए रखनी है और फिर देखिए यह साल आपके लिए कितना लाभदायक होता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम नहीं रहेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल करने में आपका व्यय होगा परन्तु अप्रैल के बाद व्यापारिक अनुकूलता के चलते आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में भी सफल रहेंगे

गुरु एवं राहु की युति प्रभाव के चलते फरवरी से अप्रैल तक आप को बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा। आने वाले महीनों में आपको निश्चित ही लाभ होगा। व्यवसायियों को व्यवसाय का विस्तार करने के लिए अवसर मिलेंगे। इस साल आप जमीन-जायदाद पर भी खर्च कर सकते हैं। यदि आप पिछले कई महीनों से घर लेने की सोच रहे हैं तो आप अपनी इस योजना को पूरा कर सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। राहु ग्रह

का गोचर आपके भाईयों के लिए भी अच्छा नहीं है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

01 मई से सामाजिक एवं पारिवारिक दोनों पक्षों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। आपकी सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से अप्रैल तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति आपकी संतान के लिए अच्छी नहीं है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

मई से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष की प्रारम्भिक तिमाही छोड़ दें तो पूरे वर्ष आप स्वस्थ रहेंगे। आप मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों से स्वस्थ रहेंगे अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए आप नियमित रूप से व्यायाम या योगा करते रहेंगे जिससे आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता रहेगा।

कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें। 23 सितम्बर के बाद अपने खान-पान पर अधिक ध्यान दें और आलस्य न करें। यह आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 17 अप्रैल के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

01 मई से विद्यार्थियों का नये तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व टेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी यात्राओं

के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है। विदेश यात्रा के भी योग हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ को भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि पर ज्यादा विश्वास करेंगे। तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्ध के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र

बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश

+919340201506,7024210124

कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com